Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महात्मा गाँधी के आर्थिक विचार

शिवलाल*

* एम ए, नेट (इतिहास) गांव लालपुरा पोस्ट,तह-चितलवाना जालौर (राज.) भारत

प्रस्तावना – महात्मा गाँधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के एक प्रमुख नेता थे। दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने के बाद अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के कहने पर उन्होंने सम्पूर्ण भारत का भारत की यात्रा की और भारत को जाना। गाँधी जी जब भारत आये उस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था इस दौरान गाँधी जी ने एम्बुलेंस नामक दल बनाया और अंग्रेजों की सहायता की थी और भारतीय को अंग्रेजी सेना में साम्मिल होने के लिए प्रोत्साहित भी किया था। इस सहयोग के बदले अंग्रेजों ने गाँधी जी को केसर ए हिन्द की उपाधि दी थी। गाँधी जी ने भारत में सर्वप्रथम बिहार के चम्पारण में सत्याग्रह किया जहाँ उनको भारत में पहली बार समफलता मिली। कालांतर में गाँधी जी खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व किया इसके उपरांत अहमदाबाद में मजदूरों की हड़ताल का समर्थन किया। गाँधी जी को तीनो जगह एक के बाद एक सफलता मिली। जलियावालाबाग हत्याकाँड और रोलेट ऐक्ट तथा 1919 के ऐक्ट में जिस तरह भारतीयों की उपेक्षा की गई उसके बाद गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाया जो चोरा चोरी कांड के करने उन्होंने वापस ले लिया इसके बाद उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया। एक प्रकार उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया।

गाँधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान कुछ प्रयोग किए इनमें सत्याग्रह, स्वदेशी, हिन्दू –मुस्लिम एकता, हरिजन उद्धार इत्यादि शामिल थे। गाँधी जी का मानना था की अंग्रेजों ने केवल भारत को गुलाम बनाया बल्कि अपनी आर्थिक नीतियों के कारण भारत की अर्थव्यस्था को नष्ट कर दिया।

अंग्रेजों ने भारत में अपनी आर्थिक नीतियों से भारत के कुटीर उद्योग को नष्ट कर दिया जो देश एक समय में सूती वस्त्र उत्पादन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था उसको एक कच्चा माल का देश बना दिया। अंग्रेजों ने भारत में औद्योगीकरण किया वह औद्योगीकरण भारत के अनुकूल नहीं था अपितु अंग्रेजों के हितो के अनुकूल था।

गाँधी जी ने कहा पश्चिम के जिन देशों ने औद्योगीकरण किया और कारखाने स्थापित किए तो वहा के कुछ लोगों को तो रोजगार मिला। पश्चिम के जिन गावों का धंधा नष्ट हुआ उन्हें तुरंत रोजगार मिल गया किन्तु भारत में ऐसा नहीं हुआ। जिनकी रोजी धान कुटाई से होती थी उनमे से अधिकांश बेरोजगार हो गए और दरिद्र हो गए। भारत में औद्योगिकरण अंग्रेजों की छत्रछाया में हो रहा था। यहां के औद्योगीकरण और पश्चिम के औद्योगीकरण में अंत था।

भारतीय माल विदेशों में नहीं जा सके उसके लिए उन्होंने निर्यात कर बहुत बड़ी मात्रा में लगाया ताकि कोई भी भारतीय व्यापारी विदेशों में अपना माल नहीं बेच सके। गाँधी जी जानते थे की अंग्रेज भारत के औद्योगीकरण के विरुद्ध थे। वह चाहते थे उनका बना कपड़ा है भारत में बिके, कपड़े है नहीं अन्य वस्तुए भी भारत में बिके।

गाँधी जी ने अपने रचनात्मक कार्यो में चरखा चलाना और सूत कातने को एक महत्वपूर्ण कार्य बताया था। एक किसान सम्मेलन में जब गाँधी जी से पूछा गया की एक किसान अपनी उपज का 80 प्रतिशत खाने पर और 20 प्रतिशत कपड़े पर खर्च करता तो खादी उत्पादन से गरीबी कैसे खत्म होगी।

गाँधी ने कहा था कहा आज जो खादी केवल भारत में है बिक रही है वही खादी अगर सारे संसार में फैल जाएं किन्तु मेरा पहला कदम इसको भारत में फैलाना होगा। मिलो में बनने वाले विलायती कपड़े का हमे बहिष्कार करना होगा। जब मिलो में बनने वाला कपड़ा बंद हो जाएगा और भारत के सभी लोग खादी पहनने लग जाएं और भारत के सभी किसान कताई बुनाई में लग जाएं तो भारत की आधी गरीबी तो दूर हो जाएगी।

अंग्रेजों के भारत में आने से पहले यहां का खादी उद्योग सारे देश में फल फूल रहा था किन्तु अंग्रेजों ने अपने आर्थिक स्वार्थो कि पूर्ति के लिए उसको नष्ट कर दिया और पुरे भारत को मेनचेस्टर के वस्त्रो से भर दिया था।

गाँधी जी देश में ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू करना चाहते थे जिससे शारीरिक श्रम को बढ़ावा मिले। इन्होने मशीनों को बेरोजगारी का मुख्य कारण बताया था। उनका मानना था की मशीनीकरण से धन और सम्पति कुछ है लोगों के हाथो में सिमट जाती थी। किन्तु ऐसा नहीं है की गाँधी जी पूरी तरह मशीनीकरण के विरोधी थे उनका मानना था मशीनों का प्रयोग होना चाहिए किन्तु लोगों को भी रोजगार मिलना चाहिए।

गाँधी जी श्रमिक और पूंजीपति को एक दूसरे से जुड़ा हुआ मानते थे। दोनों के आपसी सामंजस्य से विकास हो सकता है। यंग इंडिया में उन्होंने लिखा था कि मैंने सदा यह कहा कि मेरा आदर्श यह है कि पूंजीपति और मजदूर एक दूसरे से जुड़े हुए है। मालिक को मजदूरों कि चिंता करनी चाहिए।

गांधी जी ने ग्रामद्योग योजना प्रस्तुत की थी। गांधी जी का मानना था की गांव का प्रत्येक व्यक्ति अपनी जरुरत के सामान की पूर्ति अपने गावों से है करे। गांव वालो को इतनी कुशलता प्राप्त कर लेनी चाहिए की उनके

दुवारा निर्मित समान तुरंत बाजार में बिक जाएं। भारत के गांव अगर विकसित हो जाएं तो गाव वालो की पूर्ति के सारे सामान भारत में उपलब्ध हो जाएंगे। भारतीयों की सबसे बड़ी समस्या हैं आलस्य भारत की आधी जनता तो सिर्फ 6 महीने काम करती है बाकि चोर बनी रहती है अगर वो भी काम करने लग जाएं तो ग्रामीणों का उत्थान हो जाएगा।

गाँधी जी भारत को स्वतंत्रता तो दिलाना चाहते है थे साथ भारतीयों कि गरीबी से भी मुक्ति दिलाना चाहते थे। गाँधी जी कहते थे कि उनका भारत शहरों में नहीं गावों में बसता है। गाँधी जी शहरों और नगरों में होने वाले तेजी से विकास से चिंतित थे। शहरों दुवारा गावों से किए जा रहे शोषण को देखकर वो बहुत दुखी थे। उनका मानना था कि अगर भारतीयों को सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करनी है तो भारत के लोगों को शहरों के महलों में नहीं झोपड़ियो में रहना पड़ेगा। नगरों में इतने लोग शांति से नहीं रह सकते।

अंतत : निष्कर्षत कहा जा सकता है कि गाँधी जी अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के दुष्परिणामों से परिचित थे और भारतीयों के लिए क्या अच्छा और क्या बुरा उसको अच्छी तरह समझते थे। इसलिए उन्होंने भारत में स्वदेशी पर बल दिया और भारतीयों को अधिकांश उन वस्तुओ का उपयोग करने पर बल दिया जिनका निर्माण भारत में होता है। उन्होंने ग्राम स्वराज्य की बात की जिसके अन्तर्गत उन्होंने कहा की हमारे गांव के लोगों में इतना कौशल होना चाहिए की हमारी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति गावों से ही हो जाएं। उन्होंने शहरीकरण का खुलकर विरोध किया उनका मानना था की शहरो में शांति का अभाव होता है बड़ी संख्या में इतने लोग एक साथ रहेंगे तो वहा अशांति पैदा हो जाएगी।

गाँधी जी ने औद्योगीकरण का विरोध किया। और स्वदेशी को महत्व दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मोहनराव. यु. एस, महात्मा गाँधी का सन्देश, 1968, सुचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
2. उपाध्याय सौरभ, गाँधी विचार रत्न, 2012,इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
3. शर्मा रामविलास, गाँधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएं, 2014, कल्चर प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. टोकि राजेंद्र, ऐसे थे हमारे गाँधी, 2012 आशा बुक्स, नई दिल्ली।
5. अग्रवाल शिप्रा, अग्रवाल पी के, गाँधी विचार और हम, 2012, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।

****